ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-2* Issue-11* December- 2017
Innovation The Research Concept

उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य (अस्थिदोष रहित) एवं अस्थिदोष दिव्यांग विद्यार्थियों के आत्मविश्वास एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन

सरिता मेनारिया
सहायक आचार्या,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
लोक मान्य तिलक टी.टी. कॉलेज,
डबोक, उदयपुर

जगदीश बाबल
शोधार्थी,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
जर्नादन राय नागर विद्यापीठ,
उदयपुर ,राजस्थान

सारांश

शिक्षा मानव विकास का मूल साधन हैं।ज्ञान प्राप्ति का एक प्रमुख साधन है शिक्षा, और शिक्षा के एक अभिकरण के रूप में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता हैं विद्यालय।विद्यालय में शिक्षा ग्रहण करने वाले विद्यार्थियों के दो प्रमुख वर्ग हैं सामान्य (अस्थिदोष रहित) विद्यार्थी तथा अस्थिदोष दिव्यांग विद्यार्थी। इन दोनों वर्गो के विद्यार्थियों की शिक्षा प्राप्ति में आत्मविश्वास एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा का कितना हाथ हैं ? ताकि इससे सम्बन्धित समस्याओं पर विचार किया जा सके तथा ध्यान दिया जा सके। इसके अतिरिक्त व्यापक शैक्षिक दृष्टिकोण के सन्दर्भ में हमारे देश में तुलनात्मक रूप से अस्थिदोष दिव्यांग विद्यार्थियों से सम्बन्धित पहलुओं पर अपेक्षाकृत कम ध्यान दिया जा रहा हैं, इसी तथ्य को मद्देनजर रखते हुए अस्थिदोष दिव्यांग विद्यार्थियों का सामान्य (अस्थिदोष रहित) विद्यार्थियों के साथ तुलनात्मक अध्ययन किया गया।

मुख्य शब्द : अस्थि दोष, दिव्यांग, आत्मविश्वास, उपलब्धि, अभिप्रेरणा।

प्रस्तावना

विश्व में प्रत्येक प्राणी जो व्यवहार करते हैं, वे अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए करते हैं। संसार में सभी प्राणियों में सर्वोत्कृष्ट मनुष्य हैं, जिन्होंने सोचने समझने, ज्ञानार्जन एवं ज्ञान संरक्षण के विशेष गुणों के बल पर अपनी सभ्यता को निर्मित एवं विकसित किया हैं। मानव के विकास की इस निरन्तरता का मुख्य सूत्र हैं– "शिक्षा"।

शिक्षा मानव विकास का मूल साधन हैं, इसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान एवं कला कौशल में वृद्धि तथा व्यवहार में परिवर्तन किया जाता हैं और उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता हैं। मानवीय शक्तियों के विकास में शिक्षा की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती हैं। प्रत्येक राष्ट्र अपनी आवश्यकताओं, आदर्शों और दर्शन के अनुरूप विशिष्ट शैक्षिक व्यवस्था की संरचना बनाता हैं, इस संरचना में विगत के अनुभवों से लाभ लेकर प्रत्येक राष्ट्र वर्तमान शैक्षिक व्यवस्था में परिवर्तन लाने का प्रयास करता हैं, क्योंकि शिक्षा वह प्रक्रिया हैं जो राष्ट्र के नागरिकों में राष्ट्रीय चरित्र का विकास कर राष्ट्रीय संस्कृति और सभ्यता के अनुरूप राष्ट्र को नए नागरिक प्रदान करने में सहायक होती हैं। व्यक्ति के सामाजिककरण, राष्ट्रीयकरण अथवा आधुनिकीकरण के लिए शिक्षा की महत्त्वपूर्ण भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता हैं कि शिक्षित व्यक्ति स्वयं में प्रगति का द्योतक है।

ज्ञान प्राप्ति का एक प्रमुख साधन है शिक्षा, और शिक्षा के एक अभिकरण के रूप में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता हैं विद्यालय, क्योंकि बालक विद्यालय से ही ज्ञानार्जन करता है। समाज के प्रत्येक वर्ग के बालक विद्यालयों में शिक्षा प्राप्ति के लिए गमन करते है। बालकों की शारीरिक क्षमता के आधार पर उन्हें मुख्य रूप से दो वर्गों में विभाजित किया जाता हैं, एक तो वे विद्यार्थी होते हैं जो शारीरिक रूप से पूर्णतया स्वस्थ होते हैं तथा उनमें किसी भी प्रकार की विकृति नहीं पाई जाती है, इस प्रकार के बालक सामान्य बालक कहलाते हैं। सामान्य बालकों की क्षमता, रूचियाँ, योग्यता, आत्मविश्वास, अभिप्रेरणा आदि योग्यताएँ सामान्य या उससे अच्छी पाई जाती हैं तथा ये वातावरण के साथ शीघ्र समायोजन करने में सक्षम होते हैं।

बालकों का दूसरा वर्ग उन विद्यार्थियों का होता हैं जो शारीरिक रूप से दिव्यांग होते हैं। अर्थात् इन बालकों में कई प्रकार की विकृतियाँ पाई जाती है

तथा ये असामान्य होते हैं और सामान्य बालकों की तरह पूर्ण क्षमता से कार्य करने में सक्षम नहीं होते हैं। दिव्यांगता का एक प्रमुख प्रकार हैं अस्थिदोष दिव्यांगता, इसमें बालक की माँसपेशियों का पूर्ण विकास नहीं हो पाता हैं जिससे उसकी कार्यक्षमता बाधित होती हैं। दिव्यांगता के कारण बालकों में हीन भावना का विकास हो जाता हैं तथा उनके पिछड़ने की संभावनाएँ उत्पन्न हो जाती हैं, लेकिन फिर भी विपरीत परिस्थितियों में भी दिव्यांग बालक अपना आत्मविश्वास व उत्साह बनाए रखते हैं, तथा उपलब्धि प्राप्ति में सामान्य बालकों की तरह अग्रसर रहते हैं।

प्रत्येक बालक की शिक्षा प्राप्ति में आत्मविश्वास एक महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह करता है, यही आत्मविश्वास बालक को उसके लक्ष्य तक पहुँचाता हैं। प्रत्येक विद्यार्थी का आत्मविश्वास भिन्न–भिन्न होता हैं तथा आत्मविश्वास के आधार पर वह शिक्षा को प्राप्त करने का तथा वैसा ही बनने का प्रयास भी करता हैं। विद्यालय का वातावरण बालक के आत्मविश्वास के अनुकूल होगा तो बालक शीघ्र ही अपने लक्ष्य तक पहुँच जाएगा। आत्मविश्वास व्यक्तित्व का एक विशेष गुण हैं। आत्मविश्वासी व्यक्ति के विचार भावनाएँ, आशाएँ आदि सकारात्मक होती हैं। आत्मविश्वास जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न करता हैं तथा विपरीत परिस्थितियों का सफलतापूर्वक सामना करने में सहायता प्रदान करता हैं। आत्मविश्वास से पूर्ण व्यक्ति स्वयं को सामाजिक योग्य, भावनात्मक रूप से परिपक्व, संतुष्ट, सफल, आशावान, स्वतंत्र, स्व विष्वनीय, आगे बढ़ने वाला तथा नेतृत्व गुणों से युक्त समझता हैं। उच्च माध्यमिक स्तर पर बालक का आत्मविश्वास बढ़ जाता हैं, जो उसकी अध्ययन प्रक्रिया को भी प्रभावित करता हैं। विद्यार्थी जैसे–जैसे अपनी शिक्षा के स्तर से बढ़ता जाता हैं, और उसके आत्मविश्वास का प्रभाव उसकी शैक्षिक उपलब्धि पर भी पड़ता हैं, अतः अधिकाधिक आत्मविश्वास से शैक्षिक निष्पादन करता हुआ अपनी उपलब्धियों तक पहुँचना चाहता हैं। विद्यार्थी की उपलब्धि अभिप्रेरणा का प्रभाव उसकी शिक्षा पर पड़ता है। मैकलीलैण्ड 1958 में कहता है कि "उपलब्धि अभिप्रेरणा को जीवन का एक तरीका या जिन्दगी के बारे में एक आधारभूत अभिरूचि मान सकते हैं।" उपलब्धि अभिप्रेरणा का विचार का अर्थ किसी कार्य में सफलता प्राप्त कर गर्वचित होने से सम्बन्ध रखता हैं।

तकनीकी शब्दों की व्याख्या

अध्ययन में प्रयुक्त तकनीकी शब्दों की व्याख्या निम्नानुसार है –

अस्थिदोष दिव्यांग

सामान्य रूप में अस्थिदोष दिव्यांग विद्यार्थी वे होते हैं जिनके अस्थि अर्थात् हड्डियों के जोड़ों तथा माँसपेशियों में न्यूनता या अल्पता होती हैं जिसके कारण उनके शारीरिक अंगों का विकास भली भाँति नहीं हो पाता हैं जिसके कारण उनमें कई प्रकार की विकृतियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। ये विकृतियाँ विद्यार्थी के विकास में बाधा बन जाती हैं तथा इसके कारण वह सामान्य ढंग से कार्य करने में सक्षम नहीं हो पाता हैं।

किर्क (1962) ने अस्थिदोष युक्त दिव्यांगता को पारिभाषित करते हुए लिखा हैं – "वह बालक किसी न किसी अस्थिदोष युक्त होने के कारण गतिज–गामक क्रियाओं को सम्पन्न करने में असक्षम या अयोग्य होता हैं, को अस्थिदोष युक्त दिव्यांग बालक कहते हैं।" अर्थात् अपंग, विरूपित अंग होने के कारण ऐसे बालकों को जीवन के सामान्य कार्य व्यापारों को करने में बाधा उत्पन्न होती हैं, ऐसे बालक सामान्यतया उनकी उत्पादक क्षमता एवं सामाजिक उत्तरदायित्वों को वहन करने के अयोग्य समझे जाते हैं। कुछ बालकों में कुपोषण रोग, पक्षाघात, रक्ताल्पता अथवा अन्य शारीरिक असामान्य व्यवस्थाओं के कारण जीवन शक्ति मन्द हो जाती हैं, के शिक्षण हेतु विशेष वातावरण, उपकरण, चिकित्सा एवं निर्देशन की आवश्यकता होती हैं

किर्क ने अस्थिदोष दिव्यांगता के दो कारण बताए हैं–

1. जन्मजात विरूपण
2. दुर्घटना अथवा किसी रोग संक्रमण के परिणाम स्वरूप।

उपलब्धि अभिप्रेरणा

अपेक्षाकृत एक नयी धारणा हैं इससे अनुप्रेरणा की प्रकृति व्यक्तिगत होती हैं, इसका जन्म अमेरिका में हुआ और यह पूंजीवाद, कटु प्रतियोगिता और भौतिकवाद की ओर लगाई जाने वाली अन्धी दौड़ पर आधारित हैं।

उपलब्धि अभिप्रेरणा का आधारभूत लक्ष्य उपलब्धि होता हैं, जो उपलब्धि के लिए कोई काम करते हैं उन्हें उपलब्धि अभिप्रेरणा द्वारा प्रेरित माना जाता हैं। अभिप्रेरकों को विभिन्न वर्गों में बाँटा जा सकता हैं, यदि कोई विद्यार्थी कक्षा का मॉनीटर बनना चाहता हैं तो इसका अर्थ हैं कि शक्ति प्राप्त करना ही उसका अभिप्रेरक हैं।

मैकडोनाल्ड

"अभिप्रेरणा व्यक्ति में एक ऊर्जा परिवर्तन हैं जो कि भावात्मक जागृति तथा पूर्व अनुमान उद्देश्य सम्बन्धों द्वारा विशेषित होती हैं।"

उपलब्धि अभिप्रेरणा से युक्त व्यक्तियों में निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं :–

1. ऐसे व्यक्तियों का आकांक्षा स्तर अपेक्षाकृत ऊँचा होता हैं परन्तु वे उसे ऐसी स्थिति में रखते है, जहाँ अत्यधिक खतरा न हो।
2. उपलब्धि से सम्बन्धित कार्य में वह अधिक दृढ़ता दिखाते हैं।
3. वे अपनी सफलता से अत्यधिक प्रसन्नता प्राप्त करते हैं।
4. वह काम में अधिक निपुणता दिखाते हैं और उनका कार्य स्तर ऊँचा होता है।
5. दूसरों से आगे बढ़ने की इच्छा उनमें सशक्त होती है और भौतिक सफलता के क्षेत्र में वे अत्यधिक चमकते है।
6. उनमें सफलता प्राप्त करने की अत्यधिक चिन्ता होती हैं।
7. भौतिक दृष्टिकोण तथा उच्च पूँजीपति वर्ग से सम्बन्धित व्यक्तियों में प्रायः उपलब्धि अभिप्रेरणा की अधिक मात्रा पायी जाती हैं।

आत्मविश्वास

व्यक्ति द्वारा अपनी इच्छा व विचारों को स्वतन्त्र रूप से व्यक्त करना ही आत्मविश्वास माना गया हैं। आत्मविश्वासी व्यक्ति स्वयं के प्रति विधेयात्मक अभिवृति रखते हैं, उन्हें अपनी क्षमताओं तथा योग्यताओं की जानकारी होती हैं, वे अपनी कमियों को भली भाँति जानते हैं और स्वीकार करते हैं तथा विभिन्न जिम्मेदारियों को निभाने में आनन्द का अनुभव करते हैं। वे दुश्चिन्ता रहित तथा उच्च विद्यालयी निष्पति वाले होते हैं, उनमें समायोजनशीलता का स्तर भी उच्च होता हैं।

आत्मविश्वास स्व–प्रत्यक्षीकरण का गुण हैं इसे स्व–प्रत्यय के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति माना जाता है। आत्मविश्वास बिना दूसरों का सहारा लिए दुर्गम परिस्थितियों की समस्याओं के निराकरण की एक योजना के सन्दर्भ में देखा जाता हैं। बासवन्ना (1975) के अनुसार –"सामान्य रूप में आत्मविश्वास किसी व्यक्ति के जीवन में अनुग्रीव की जाने वाली कठिनाइयों को प्रभावशील तरीके से निराकरण करने तथा सभी क्रियाओं को सही तरीकों से चलाने की एक योग्यता है।"

वस्तुतः आत्मविश्वास व्यवहार का नियंत्रक, व्यक्तित्व का पूरक वो प्रत्यय हैं जिसके अभाव में व्यक्ति शारीरिक रूप से प्रबल होते हुए भी मानसिक रूप से कमजोर, कायर, पलायनवादी, शंकालु एवं परिस्थितियों से दूर भागने वाला बन जाता हैं, उसकी बौद्धिक, मानसिक व शारीरिक क्षमताएँ आत्मविश्वास के अभाव में व्यर्थ हो जाती हैं अतः आत्मविश्वास व्यक्तित्व की महत्वपूर्ण आवश्यकता हैं।

समस्या का औचित्य

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए चुनी गई समस्या का कारण यह हैं कि मेरे मन में यह विचार आया कि हमारे देश के विकास में शिक्षा पर बहुत बल दिया गया हैं, शिक्षा ग्रहण करने वाले विद्यार्थियों के दो प्रमुख वर्ग हैं सामान्य (अस्थिदोष राहत) विद्यार्थी तथा अस्थिदोष दिव्यांग विद्यार्थी। इन दोनों वर्गो के विद्यार्थियों की शिक्षा प्राप्ति में आत्मविश्वास एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा का कितना हाथ हैं? ताकि इससे सम्बन्धित समस्याओं पर विचार किया जा सके तथा ध्यान दिया जा सके। इसके अतिरिक्त व्यापक शैक्षिक दृष्टिकोण के सन्दर्भ में मुझे यह महसूस हुआ कि हमारे देश में अब तक हुए अधिकांश अध्ययनों में मुख्यतः सामान्य (अस्थिदोष रहित) विद्यार्थियों पर तो अनेक प्रकार के अध्ययन किए जा रहे हैं परन्तु तुलनात्मक रूप से अस्थिदोष दिव्यांग विद्यार्थियों से सम्बन्धित पहलुओं पर अपेक्षाकृत कम ध्यान दिया जा रहा हैं, इसी तथ्य को मद्देनजर रखते हुए मेरे मन में यह विचार आया कि क्यों न अस्थिदोष दिव्यांग विद्यार्थियों का सामान्य (अस्थिदोष रहित) विद्यार्थियों के साथ तुलनात्मक अध्ययन किया जाए। इसके अतिरिक्त वर्तमान समय तक अस्थिदोष दिव्यांग विद्यार्थियों से सम्बन्धित शोध बहुत कम हुए, अतः इस दृष्टि से भी यह शोध कार्य औचित्य से पूर्ण हैं। उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु किए जाने वाले प्रयासों तथा इन प्रयासों का इनके व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करने हेतु ही मैंने इस समस्या का चुनाव किया तथा इस हेतु ही व्यक्तित्व के दो पक्षों आत्मविश्वास एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा का अध्ययन करने का निश्चय किया हैं।

समस्या कथन

'प्रस्तुत शोध का समस्या कथन इस प्रकार है – "उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य (अस्थिदोष रहित) एवं अस्थिदोष दिव्यांग विद्यार्थियों के आत्मविश्वास एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन।"

शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध समस्या के उद्देश्य निम्न हैं –

1. उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य (अस्थिदोष रहित) विद्यार्थियों के आत्मविश्वास का अध्ययन करना।
2. उच्च माध्यमिक स्तर के अस्थिदोष दिव्यांग विद्यार्थियों के आत्मविश्वास का अध्ययन करना।
3. उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य (अस्थिदोष रहित) विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा का अध्ययन करना।
4. उच्च माध्यमिक स्तर के अस्थिदोष दिव्यांग विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा का अध्ययन करना।
5. उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य (अस्थिदोष रहित) एवम् अस्थिदोष दिव्यांग विद्यार्थियों के आत्मविश्वास का तुलनात्मक अध्ययन करना।
6. उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य (अस्थिदोष रहित) एवम् अस्थिदोष दिव्यांग विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित शून्य परिकल्पना निर्मित की गई –

प्रस्तुत शोध अध्ययन की निम्नलिखित परिकल्पनाएँ निर्मित की गई हैं –

1. उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य (अस्थिदोष रहित) व अस्थिदोष दिव्यांग विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में सार्थक अन्तर नहीं होगा।
2. उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य (अस्थिदोष रहित) व अस्थिदोष दिव्यांग विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर नहीं होगा।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध के लिए शोधकर्त्ता द्वारा भौगोलिक दृष्टि से जोधपुर जिले का चयन किया गया ।

परिसीमन

इस शोध को जोधपुर जिले तक सीमित रखा गया। न्यादर्श में सामान्य (अस्थिदोष रहित) विद्यार्थियों तथा अस्थिदोष दिव्यांग विद्यार्थियों को लिया गया। प्रत्येक विद्यालय से 60–60 विद्यार्थियों अर्थात् कुल 120 विद्यार्थियों का चयन किया गया हैं।

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त विधि

प्रस्तुत अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

अध्ययन में प्रयुक्त विधि एवं उपकरण

प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया गया –

1. आत्मविश्वास प्रश्नावली–डॉ. रेखा अग्निहोत्री
2. उपलब्धि अभिप्रेरणा टेस्ट–डॉ. वी. पी. भार्गव

सांख्यिकी तकनीक

अध्ययन से प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण विभिन्न सांख्यिकी तकनीक आवृति वितरण, मध्यमान,प्रमाप विचलन एवं टी परीक्षण द्वारा किया गया।

साहित्यावलोकन

आभा माथुर (1985) – ने इलाहाबाद के हाई स्कूल एवं इण्टर मीडिएट कॉलेजों के 13 से 16 वर्ष के 50 दिव्यांग एवं 50 सामान्य बालकों की समायोजन समस्याओं, आकांक्षा स्तर, आत्मसम्प्रत्यय एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन किया। शोधकर्ता ने आत्मविश्वास की दृष्टि से तुलना करने पर दिव्यांग एवं सामान्य बालकों, दिव्यांग एवं सामान्य बालिकाओं में सार्थक अन्तर पाया।

जे. एफ. क्राउस (2006) – ने अपने अध्ययन में पाया कि दिव्यांग बालकों को समाज में विशेष सहयोग की आवश्यकता होती हैं, तथा वे सहयोग के बल पर समाज के सामान्य बालकों की तरह जीवन जीने में सक्षम होते हैं।

नेहा चौधरी (2007) – ने आत्मविश्वास तथा शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन किया और पाया कि अनुसूचित जाति व जनजाति के छात्रों में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया।

स्टीफेन एल. एवं स्टोल्ज (2006) – ने अपने आत्मविश्वास सम्बन्धी अध्ययन में पाया कि व्यक्तिगत प्रदर्शन में आत्मविश्वास की कमी के साथ–साथ निरन्तर गिरावट पाई गई। स्टीफेन ने अपना यह अध्ययन एथलीटो व गैर एथलीटो के प्रदर्शन को आत्मविश्वास के साथ सम्बन्धित करके किया। इनके अनुसार एथलीटो में आत्मविश्वास की अधिकता के कारण उनका प्रदर्शन गैर एथलीटो की तुलना में अच्छा था।

डॉ. ओ. पी. शर्मा (1991) – डॉ. ओ. पी. शर्मा ने अनुसूचित जाति में विभिन्न उपजातियों के छात्र अध्यापकों का उनके उपलब्धि अभिप्रेरणा तथा प्रशिक्षण में निष्पादन के सन्दर्भ में तुलनात्मक नामक शीर्षक पर अध्ययन किया तथा पाया कि –

मेघवाल जाति के छात्र अध्यापकों की उपलब्धि अभिप्रेरणा का स्तर उच्च पाया गया तथा अनुसूचित जाति की नौ उपजातियों में से धोबी जाति के छात्र अध्यापकों की उपलब्धि अभिप्रेरणा का स्तर सबसे निम्न था।

साधारण धारणा के विपरीत अनुसूचित जाति के छात्र अध्यापकों का उपलब्धि अभिप्रेरणा का स्तर सामान्य भारतीय स्नातकों की तुलना में कई गुना उच्च पाया गया।

लायनडो (1975) –लायनडो ने उपलब्धि अभिप्रेरणा और असफलता के भय पर किए गए शोध में यह निष्कर्ष निकाला कि उपलब्धि अभिप्रेरणा और असफलता के डर के बीच नकारात्मक सम्बन्ध हैं। इस अध्ययन में नकारात्मक सम्बन्ध स्पष्ट दिख रहा था क्योंकि असफलता का डर था कि उपलब्धि अभिप्रेरणा का एक भाग हैं लेकिन यह नकारात्मक रूप से उच्च उपलब्धि की ओर मदद करता हैं। अत्यधिक असफलता का डर अभिप्रेरणा का काम करता है।

प्रस्तुत शोध का सांख्यिकी विश्लेषण एवं व्याख्या

सारणी संख्या – 1

उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य (अस्थिदोष रहित) व अस्थिदोष दिव्यांग विधार्थियों के आत्मविश्वास से सम्बन्धित प्रदत्तों की व्याख्या एवं विश्लेषण

क्र.सं.	वर्ग	समूह संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी–मूल्य	सार्थकता स्तर (0.05 विश्वास स्तर पर)
1	सामान्य (अस्थिदोष रहित) विद्यार्थी	60	28.66	7.66	1.50	असार्थक
2	अस्थिदोष दिव्यांग विद्यार्थी	60	26.91	7.27		

उपरोक्त सारणी में 120 विधार्थियों में से 60 सामान्य (अस्थिदोष रहित) तथा 60 अस्थिदोष दिव्यांग विधार्थियों का आत्मविश्वास हैं। सामान्य (अस्थिदोष रहित) तथा अस्थिदोष दिव्यांग विधार्थियों से प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रमाप विचलन तथा टी–मूल्य को दर्शाया गया हैं। सामान्य (अस्थिदोष रहित) विधार्थियों के अंकों का मध्यमान अस्थिदोष दिव्यांग विधार्थियों से 1.73 अधिक हैं तथा अंकों का प्रमाप विचलन 0.39 अधिक हैं। गणना द्वारा टी–मूल्य 1.50 प्राप्त हुआ हैं जो 0.05 विश्वास स्तर पर टेबल वेल्यू 1.96 σ से कम हैं। अतः सामान्य (अस्थिदोष रहित) एवं अस्थिदोष दिव्यांग विधार्थियों के आत्मविश्वास में सार्थक अन्तर नहीं हैं।

सारणी संख्या – 2

उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य (अस्थिदोष रहित) व अस्थिदोष दिव्यांग विधार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा से सम्बन्धित साँख्यिकी

क्र.सं.	वर्ग	समूह संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी–मूल्य	सार्थकता स्तर (0.05 विश्वास स्तर पर)
1	सामान्य (अस्थिदोष रहित) विद्यार्थी	60	28.60	7.55	1.51	असार्थक
2	अस्थिदोष दिव्यांग विद्यार्थी	60	25.75	7.50		

उपरोक्त सारणी में 120 विधार्थियों में से 60 सामान्य (अस्थिदोष रहित) तथा 60 अस्थिदोष दिव्यांग विधार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा हैं। सामान्य (अस्थिदोष रहित) तथा अस्थिदोष दिव्यांग विधार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा से प्राप्त प्राप्तांकों का अंकों का मध्यमान, प्रमाप विचलन तथा टी–मूल्य को दर्शाया गया हैं। सामान्य (अस्थिदोष रहित) दिव्यांग विधार्थियों के अंकों का मध्यमान अस्थिदोष दिव्यांग विधार्थियों के अंकों के मध्यमान से 2.17 कम हैं तथा अंकों का प्रमाप विचलन .05 अधिक हैं। गणना द्वारा टी–मूल्य 1.51 प्राप्त हुआ हैं। जो 0.05 विश्वास स्तर पर table value 1.96 σ से कम हैं अतः सामान्य (अस्थिदोष रहित) एवं अस्थिदोष दिव्यांग विधार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर नहीं हैं।

परिकल्पना से संबंधित निष्कर्ष

परिकल्पनाओं की जाँच अनुसंधान में प्राप्त प्रदत्तों के आधार पर की गई जिसके परिणाम इस प्रकार रहे–

परिकल्पना संख्या – 1

"उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य (अस्थिदोष रहित) एवं अस्थिदोष दिव्यांग विधार्थियों के आत्मविश्वास में सार्थक अन्तर नहीं होगा।"

निष्कर्ष

शोध अध्ययन से प्राप्त आत्मविश्वास से सम्बन्धित प्रदत्तों का विश्लेषण करने से ज्ञात हुआ कि सामान्य (अस्थिदोष रहित) एवं अस्थिदोष दिव्यांग विधार्थियों के आत्मविश्वास में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया जो कि हमारी परिकल्पना के अनुरुप हैं, अतः परिकल्पना संख्या 1 स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना संख्या – 2

"उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य (अस्थिदोष रहित) एवं अस्थिदोष दिव्यांग विधार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर नहीं होगा।"

निष्कर्ष

शोध अध्ययन से प्राप्त उपलब्धि अभिप्रेरणा से सम्बन्धित प्रदत्तों का विश्लेषण करने से ज्ञात हुआ कि सामान्य (अस्थिदोष रहित) एवं अस्थिदोष दिव्यांग विधार्थियों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया, जो कि हमारी परिकल्पना के अनुरूप हैं, अतः परिकल्पना संख्या 2 स्वीकृत की जाती हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *ए. के. भार्गव तथा बी. लावनिया, 1983, एक्पेपसनल चिल्ड्रेन, पॉपुलर प्रकाशन, आगरा*
2. *गैरिट हैनरी,1981, शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग, कल्याण पब्लिकेशन, नई दिल्ली*
3. *बी.एल.,क्राउन,1954, दी नेगेटिव सेल्फ कॉन्सेप्ट एण्ड परसनेलिटी मेजर*
4. *वी.एन.कौशिक, विकलांग शिक्षा सन्धु, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर*
5. *मनीरामा, फिजीकली हैण्डीकैप्ड इन इण्डिया, आशीष पब्लिसिंग हाउस, नई दिल्ली*
6. *पी.देवी एण्ड एस. शर्मा, 1970, सेल्फ कॉन्सेप्ट एण्ड स्कूल एचीवमेंट, इण्डियन एजुकेशन रिव्यू*
7. *ऊषा भट्ट,1963, फिजीकली हैण्डीकैप्ड, बॉम्बे पॉपुलर प्रकाशन*
8. *जीन.एम.टवींग, 2007, जेन रेशन मी. व्हाई टुडेज यंग अमेरिकन्स आर मोर कॉन्फीडेन्ट,एसर्टिव, एनटाइटल्ड एण्ड मोर मिसरबल देन एवर वी,*
9. *आर.सिंह, 1984, ए स्टडी ऑफ सेल्फ कॉन्सेप्ट एसप्रिएशन एण्ड एचीवमेंट मोटिवेशन ऑफ ट्राइबल एप्रेलेसेन्ट्स, ऑफ राजस्थान, पी.एच.डी थीसिस ऑफ मोहनलालसुखाड़िया विश्वविद्यालयउदयपुर*
10. *रेखा अग्निहोत्री, 1987, मैन्युअल फॉर अग्निहोत्रीज सेल्फ कॉन्फीडेन्स इनवेन्ट्री (ASCI), नेशनल साइकोलॉजीकल कॉइपोरेशन, आगरा*
11. *वी.पी.भार्गव, रिवाइज्ड मैन्युअल फॉर एचीवमेन्ट मोटिव टेस्ट (ACMT), नेशनल साइकोलोजीकल कॉरपोरेशन, आगरा*